International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

जनजातीय में शासकीय योजनाओं की भूमिका का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन। छत्तीसगढ़ राज्य के बालोद जिला के विशेष संदर्भ में

राजेश कुमार मारकण्डेय

समाजशास्त्र विभागए चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेंरठ (उ.प्र.)

सांरांशः
जनजातियां सभ्य समाज से संम्पर्कों एवं परसंस्कृति – ग्रहण का प्रभाव आदिवासी समाज में वर्गभेद भाव के रूप में हुआ है । तथा आर्थिक स्तर को भी प्रभावित किया है जनजातियॉ अपनी परम्परागत व्यवसाय को छोड़कर आधुनिक समाजों के सम्पर्क में आने के कारण दुरगासी परिवर्तन के प्रति विशेष रूप से संवेदनशील होते जा रहे है जिससे जनजातीय समूहो में आत्मनिर्भरता शक्तिशाली व्यक्ति का अभाव हेाने के कारण जनजातीय संगठन का भी ह्रास हो रहा है ।

की वर्ड :– परम्परागत, व्यवसाय, सांमजिक एवं आर्थिक घटक ।

प्रस्तावना :– जनजातियाँ हमारे देश का महत्वपूर्ण हिस्सा है । यह भारत वर्ष के विभिन्न राज्यों में पायी जाती हैं । कुछ उल्लेखनीय राज्य है प.बंगाल , बिहार, म.प्र. छ.ग. इत्यादि यह अध्ययन छत्तीसगढ़ राज्य में पायी जाने वाली गोंड़ एवं हल्बी जनजातियों के ऊपर है । इस अध्ययन में जनजातीय समुदायों के सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था का अध्ययन किया गया है । भारत जैसे विकासशील देश में विभिन्न जनजातियों का समूह अलग अलग राज्यों में पाया जाता है जनजातियों के सामाजिक और आर्थिक पहलुओं में विभिन्नता देखी जा सकती है । जनजातियाँ ग्रामीण और अविकसित क्षेत्रों में निवास करती है । जनजातियॉ विभिन्न समस्याओं का सामना करती है । प्रमुख रूप से अपर्याप्त है । इस अध्ययन में छ.ग. राज्य में पाई जाने वाली जनजातियों का सामाजिक व आर्थिक स्थिति का अध्ययन किया गया है ।

अध्ययन का उद्देश्य :– जनजतीय समाज के सामाजिक व आर्थिक स्थिति का अध्ययन किया गया है ।

अध्ययन का क्षेत्र :– शोध क्षेत्र हेतु जिला बालोद के डौण्डी विकासखण्ड का चयन किया गया है । वर्तमान में डौण्डी को दो भागो में विभक्त किया गया है डौण्डी भाग एक एवं भाग दो । उद्देश्य के आधार पर जनजातीयों को देखतें हुए भाग एक का चयन किया गया है । भाग एक में कुल जनसंख्या 10486 है । जिसमें डौण्डी ब्लाक में अनुसूचित जनजातियों की कुल जनसंख्या 5993 है । इनमें पुरूष जनजाति की जनसंख्या 2890 है । और महिला जनजाति की संख्या 3103 है । जिसमें से महिला लाभान्वितों की संख्या 1500 है । इनमें से 20% अर्थात 300 महिला उत्तरदाताओं का चयन दैव निदर्शन पद्वति से किया गया है ।

प्रविधि एवं उपकरण :– प्राथमिक तथ्यों के संकलन हेतु उपकरण के रूप में साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है ।

तालिका 2.6
उत्तरदाताओं का स्वयं विवाह संबंधी निर्णय

क्र.	विवाह संबंधी निर्णय	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	79	26.34
2	नही	221	73.66
	कुल	300	100

तलिका क्रमांक 2.6 से ज्ञात हुआ कि 73.66 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने स्वयं के विवाह संबंधी निर्णय होने की सहमति बतायी तथा 26.34 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने स्वयं के विवाह संबंधी निर्णय नही लेने की सहमति दी । अतः तालिका क्रमांक से ज्ञात हुआ कि आज के

आधुनिक दौर में भी महिलाएँ या लड़कियॉ स्वयं के विवाह संबंधी भी निर्णय नही ले पाते है । लगभग तीन तिहाई उत्तरदाता ने अपने विवाह के लिए स्वयं निर्णय लिये ।

तालिका 2.7
उत्तरदाताओं से पारिवारिक मामले में राय

क्र.	पारिवारिक मामले में राय	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	38	12.66
2	नही	262	87.34
	कुल	300	100

तालिका क्रमांक 2.7 से ज्ञात हुआ कि 87.34 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने पारिवारिक निर्णय में उनकी राय या सहमति नही लिये जाने की बात कही तथा 12.66 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने पारिवारिक निर्णय में उनकी राय लेने की बात कही । अतः तालिका से ज्ञात हुआ कि आधुनिक समय के अनुसार लोगो में थोड़ी परिवर्तन आयी है । जिससे उत्तरदाताओं से उनके पारिवारिक मामले में उनकी सहमति लेना एक नवीन परिवर्तन दिखाई दी ।

तालिका 2.8
उत्तरदाताओं को सामाजिक बैठक में जाना

क्र.	उत्तरदाताओं को सामाजिक बैठक में जाना	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	00	00
2	नही	300	100
	कुल	300	100

उपर्युक्त तालिका क्रमांक 2.8 से स्पष्ट हुआ कि उत्तरदाताओं से उनकी सामाजिक बैठक में जाने संबंधी पुछने से पता चला कि 100 प्रतिशत उत्तरदाताएँ सामाजिक बैठक में नही जाते है इतनी लंबी उड़ान भरनें पर भी सामाजिक जो रीति रिवाज व सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन नही हुआ है । हमारी सोच विचार में जरूर परिवर्तन दिखाई पड़ती है लेकिन आम जीवन की बात आती है तो समाज और सामजिक लोगो की विचारधाराएँ जहॉ था वही है ।

तालिका 2.9
उत्तरदाताओं के स्वयं की भूमि

क्र.	उत्तरदाताओं के स्वयं की भूमि	आवृत्ति	प्रतिशत
1	0 से 1 एकड़	132	44.00
2	2 से 4 एकड़	161	53.67
3	5 से 7 एकड	07	2.33
4	8 से 10 एकड	0	0
5	10 एकड़ से अधिक	0	0
	कुल	300	100

तलिका क्र. 2.9 में भूमि के अध्ययन में पाया गया कि सबसे अधिक भूमि धारक उत्तरदाताओं की संख्या 53.67 है जिनके पास 2 से 4 एकड़ के मध्य भूमि है अतः यह देखा गया है कि 0 से 1 एकड़ और 2 से 4 एकड़ वाले उत्तरदाताओं की संख्या में अधिक अंतर नही है तथा वे शासन के कृषि संबंधी लाभ भी उठा रहे है केवल 2.33 उत्तरदाताओं के पास अपने स्वयं की भूमि 5 से 7 एकड़ है और इन्ही उत्तरदाताओ के पास सामान्यतः सुविधाएँ भी है ।

तालिका 2.9
उत्तरदाताओं के कृषि योग्य भूमि

क्र.	उत्तरदाताओं के कृषि योग्य भूमि	आवृत्ति	प्रतिशत
1	0 से 1 एकड़	214	71.33

2	2 से 4 एकड़	86	23.67
3	5 से 7 एकड	0	0
4	8 से 10 एकड	0	0
5	10 एकड़ से अधिक	0	0
	कुल	300	100

तलिका क्र. 2.10 में यह स्पष्ट है कि उत्तरदाताओं की कुल भूमि में कितना भूमि कृषि योग्य है । तो यह पाया गया कि 71.33 उत्तरदाताओं ने कहा कि 0 से 1 एकड़ भूमि ही कुषि कार्य के लिए उपर्युक्त है और शेष में कृषि कार्य नही किया जा सकता है । 28.67 प्रतिशत उत्तरदाता जिनके कुल भूमि से केवल 2 से 4 एकड़ भूमि के कृषि कार्य किया जाता है । तालिका के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि सबसे अधिक उत्तरदाता कृषि कार्य हेतु 0 से 1 एकड़ भूमि का प्रयोग करते है । और शेष उत्तरदाता अपने भूमि तथा दूसरों की भूमि में कार्य करते है ।

निष्कर्ष :– जनजातियों की सामाजिक स्तर को ज्ञात करने पर पाया गया कि आज भी समाज में वर्ग भेद भाव पाया जाता है जिसके कारण महिलाओं को पारिवारिक व सामाजिक फैसले में सम्मिलित नही किया जाता है । इससे पता चलता है कि जनजातीय समुदाय अन्य समुदाय के सम्पर्क में आने के कारण अपने समाज के महिलाओं के प्रति अपने विचारधारा को सकीर्ण कर लिये है। आर्थिक स्तर को ज्ञात करने पर पाया गया कि जनजातियों के पास स्वयं की कृषि है लेकिन उनमें से अधिकांश उत्तरदाताओं के पास कृषियोग्य भूमि बहुत ही कम है । जो जीवन यापन करने हेतु रोजमर्रा की आवश्यकताओं को पूरा करने में असमर्थ है ।

सन्दर्भ ग्रथ सूचि :–

1. श्रीनिवास एम.एन. , 1966 सोशल चेंज इन मार्डन इंडिया यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया ।
2. शर्मा ब्रम्हदेव 1986, आदिवासी विकास, मध्यप्रेदश हिंदी ग्रथ अकादमी भोपाल ।
3. Singh, K.S. Ethnicity, Identity and Development manohar New delhi 1990.
4. Ghurye G.S. The Scheduled Tribes , Popular Book Depot , Mumbai 1983.
5. 1983 , मार्डन डवलपमेंट एंड ट्रेडीशनल आइडियोंलॉजी अमंग टाइबल सोसाइटीज , एथनोग्राफिक एंड फोक कल्चर सोसाइटी : लखनऊ